Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

भाषा, संवेदना और मशीन: मानवीय अभिव्यक्ति की चुनौति

डॉ. हासुळे सिंधु रामकिसन*
मु. हरबळ पो. सोनखेड,ता. लोहा जि. नांदेड

शोध सार

भाषा मनुष्य की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक हैं। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं, संवेदनाओं और अनुभवों को अभिव्यक्त करता हैं। भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति, सभ्यता और चेतना की वाहक हैं। मनुष्य की संवेदना उसकी पीड़ा, प्रेम, करूणा, क्रोध और आशा सब कुछ भाषा के माध्यम से आकार ग्रहण करता हैं।परंतु इक्कीसवीं सदी में जब मशीने, कृत्रिम बुध्दिमत्ता और डिजिटल तकनीक मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चकी हैं। तब भाषा और संवेदना के संबंध में कई चुनौतिया ँ सामने आई है। क्या मशीने भाषा को समण् स्कती हैं या नहीं, बल्कि यह है कि क्या मशींने मानवीय संवेदना को उसी गहराई से महसूस और अभिव्यक्त कर सकती हैं, जैसे मनुष्य करता हैं?

बीज शब्द: *तकनीकी, प्रणालियां, चुनौति, कृत्रिम, औद्योगिक, नैतिक, दार्शनिक, ई-लर्निंग,डीजिटल, मीड़ीया आदि।*

Received: 02/12/2025
Accepted: 17/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
डॉ. हासुळे सिंधु रामकिसन
Email: shindesindhu373@gmail.com

प्रस्तावना:

भाषा मानव संप्रेषण का आधारभूत करने में सहायक होती हैं। सामान्यतः भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम कहा जा सकता हैं। भाषा अपने आभ्यन्तर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम हैं। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परंम्परा से विच्छिन्न हैं।

भाषा मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग करती हैं। भाषा के बिना न तो विचारों का विकास संभव है और न ही सामाजिक संगठन। भाषा के माध्यम से ही ज्ञान का संचय, परंपरा का संरक्षण और संस्कृति का विस्तार होता हैं।

भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं है। उसमें अनुभव, भाव, सामाजिक संरचना और ऐतिहासिक चेतना निहित होती हैं। जब कोई व्यक्ति अपनी मातृभाषा में बोलना या लिखना है तो उसमें उसकी पूरी सांस्कृतिक स्मृति सामाहित रहती हैं। भाषा की यह शक्ति ही उसे संवेदना से जोड़ती हैं। संवेदना के बिना भाषा शुल्क हो जाती है और भाषा के बिना संवेदना अभिव्यक्त नहीं हो पाती हैं।

संवेदना:

स्वेदना मानवीय अभिव्यक्ति का प्राणतत्व हैं। संवेदना मनुष्य की आत्मा हैं। दुःख में आंसू आना, खुशी में मुस्कुराना अन्याय देखकर क्रोधित होना ये सब संवेदना के ही रूप है। साहित्य, कला और संगीत का जल्म संवेदनासे ही हुआ है।

कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक ये सभी मानवीय संवेदना की अभिव्यक्तियां है। प्रेमंचद की कहानियां, निराला की कविताएं या महादेवी वर्मा का इनमें केवल भाषा नहीं, बल्कि गहरी मानवीय संवेदना प्रवाहित होती हैं। संवेदना अनुभव से जन्म लेती हैं। भूख, पीड़ा, संघर्षा और प्रेम इन सबका अनुभव लिए बिना संवेदना पूर्ण नहीं होती। यही वह बिंदू है जहां मनष्य और मशीन के बीच मूलभूत अंतर स्पष्ट होता है।

1. मशीन और भाषा: एक नया संबंध:

तकनीकी विकास के साथ मशींने अब भाषा का प्रयोग करने लगी हैं। कंप्यूटर, मोबाईल, चैटबा ँह और कृत्रिम बुध्दिमत्ता पर आधारित

प्रणालियां आज भाषा को समझने और उत्पन्न करने में सक्षम हैं। मशीने शब्दों को पहचान सकती है और अनुवाद भी कर सकती है। यह उपलब्धि विज्ञान की दृष्टि से अन्यंत महत्वपूर्ण हैं। लेकिन यहां एक प्रश्न उठता है- क्या मशींने भाषा को उसी तरह समझती हैं, जैसे मनुष्य? मशीनों के लिए भाषा एक डेटा है, एक संरचना है, जिसे एल्गोरिदम के माध्यम से संसाधित किया जाता हैं। जबकि मनुष्य के लिए भाषा जीवन का अनुभव हैं।

2. मशीन और संवेदना: एक कृत्रिम प्रचार:

संवेदना मशीनों के लिए सबसे बड़ी चुनौति हैं। मशीने संवेदना का अभिनय कर सकती हैं, लेकिन उसे महसूस नंही कर सकती है। वे दुःख का वर्णन कर सकती हैं, लेकिन दुःख का अनुभव नहीं करती। वे प्रेम पर कविता लिख सकती हैं, लेकिन प्रेम की अनुभूति नहीं रखती।

कृत्रिम बुध्दिमत्ता आधारित प्राणालियां मानव व्यवहार के पैटर्न का विश्लेषण करके प्रतिक्रियाएं देती हैं। यह प्रक्रिया गणनात्मक हैं, अनभूतिपरक नही। इसलिए मशीन की संवेदना वास्तविक नही बल्कि अनकरणात्मक होती हैं। यही कारण है कि मशीन द्वारा रचित साहित्य या संवाद प्रभावशाली तो हो सकता है, लेकिन उसमें मानवीय पीड़ा की गहराई अक्सर अनुपस्थित रहती हैं।

3. भारतीय चिंतन में भाषा और संवेदना:

भारतीय दर्शन में भाषा को 'वाकू' कहा गया हैं। ऋग्वेद से लेकर उपनिषदों तक भाषा को सृजनात्मक शक्ति माना गया हैं। भरत मुनि के 'नाट्यशास्त्र' में रस सिध्दांत संवेदना की केंद्रीय भूमिका को स्थापित करता हैं।

इस का अनुभव केवल शब्दों से नहीं, बल्कि भाव, विभाव और अनुभाव के माध्यम से होता हैं। यह सिध्दांत स्पष्ट करता है कि भाषा तभी प्रभावी होती हैं जब उसमें संवेदना समाहित हों।

4. मशीन का उदय और तकनीकी भाषा:

औद्योगिक क्रांति के बाद मशीनें मानव जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन गई प्रारंभ में मशीनों का उपयोग शारीरिक श्रम को कम करने के लिए किया गया, किंतु धीरे-धीरे उनका प्रवेश बौध्दिक क्षेत्रों में भी होने लगा। कंप्यूटर के आविष्कार ने इस दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन किया।

कृत्रित बुध्दिमता और मशीन लर्निंग के विकास के साथ मशीनें अब भाषा को समझने और उत्पन्न करने का दावा कर रही हैं। प्राकृतिक भाषा संसाधन (एनएलपी) के माध्यम से मशीने शब्दों, वाक्यों और अनुच्छेदों के पैटर्न पहचानती हैं। मशीन भाषा को अनुभव के रूप में नहीं, बल्कि डेटा संरचना के रूप में गृहण करती हैं। इसलिए मशीन की भाषा में संवेदना का अभाव दिखाई देता है।

5. मशीन भाषा की सीमाएं:

मशीन भाषा की सबसे बड़ी सीमा उसका अनुभव विहित होना हैं। मशीन किसी भी घटना का वर्णन कर सकती है, किंत वह उस धटना से उत्पन्न भावनाओं को महसूस नही कर सकती। उदाहरण के लिए, मशीन युध्द गरीबी या मृत्यु पर लेख लिख सकती है, पंरतु उसने न युध्द देखा है, न भूख सही है और न किसी अपने को खोने का दर्द महसूस किया हैं।

मशीन नैतिक विवके से भी रहित होती है। वह यह नहीं समझती कि कौन-सा कथन समान के लिए घातक हो सकता है और कौन-सा कल्याणाकारी मशीन को जो निर्देश दिए जाते हैं। वही उसके लिए सत्य बन जाते हैं। इस कारण भाषा के क्षेत्र में मशीन का अंधाधुंध उपयोग खतरनाक हो सकता हैं। भाषा केवल अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व भी हैं। मशीन इस उत्तरदायित्व को नहीं समझती। इसलिए मानवीय नियंत्रण और विवके अनिवार्य हैं।

6. मानवीय भाषा और मशीन भाषा:

मानवीय भाषा और मशीन भाषा के बीच अंतर केवल तकनीकी नंही, बल्कि दार्शनिक और संवेदनात्मक भी हैं। मानवीय भाषा जीवन के प्रत्यक्ष अनुभवों से उत्पन्न होती हैं। इसके विपरीत मशीन भाषा अनुभव से नहीं, बल्कि डेटा से जन्म लेती है। मशीन ने जो पठा है, जो संग्रहित किया है, उसी के आधार पर वह भाषा का निर्माण करती हैं। वह यह नहीं जानती कि शब्दों के पीछे कौनसी पीड़ा छिपी है या कौन-सा शब्द किसी के जीवन को बदल सकता हैं।

7. साहित्य और मशीन: नई चुनौतियां:

साहित्य मनुष्य के जीवनानुभव की कलात्मक अभिव्यक्ति हैं। कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक या मानवीय संवेदना से उपजते हैं। आज मशीन द्वारा रचित कविताएं और कहानियां सामने आ रही हैं, जो तकनीकी दृष्टि से प्रभावशाली लग सकती है, किंतु उनमें आत्मा का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है। मशीन साहित्य का अनुकरण कर सकती है; सृजन नहीं। सृजन के लिए जीवन का अनुभव आवश्यक हैं- संघर्ष,

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

पीड़ा, प्रेम और असलता का अनुभव मशीन ने न कभी अपमान सहा है, न प्रेम में टटन महसुस की हैं। इसलिए उसका लेखन सतही होता हैं।

यदि साहित्य में मशीन का अति-उपयोग होने लगा, तो मौलिकता और रचनात्मकता संकट में पड़ सकती हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि मशीन को साहित्य का सहायक माना जाए, रचनाकार नहीं।

8. लोकभाषा और बोली; डिजिटल संकट:

लोकभाषाएं और बोलियां समाज की संवेदना की सबसे सजीव अभिव्यक्ति होती हैं। इनमें खेत, गांव, श्रम, उत्सव और पीड़ा की गूंज सनाई देती हैं। लोकभाषा में कहे गए शब्द सीधे रहदय को छुते हैं। डिजिटल युग में मानक भाषा का प्रभुत्व बढ़ रहा हैं। मशीनें प्रायः उसी भाषा को प्राथमिकता देखी है जो अधिक डेटा में उपलब्ध हो। परिणामस्वरूप छोटी भाषाएं और बोलियां हाशिए पर जा रही हैं। यह भाषाई विविधता के लिए गंभीर संकट हैं।

यदि लोकभाषाएं समाप्त हो जाएंगी, तो समाज अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कट जाएगा। इसलिए तकनीक का उपयोग भाषाई संरक्षण के लिए होना चाहिए, न कि भाषाई विनाश के लिए।

9. शिक्षा में भाषा और मशीन:

शिक्षा किसी भी समाज की संवेदनात्मक और बौध्दिक नींव होती हैं। भाषा शिक्षा का मुख्य माध्यम है, जिसके द्वारा ज्ञान, मुल्य और दृष्टि का हस्तांतरण होता हैं। परंपरागत शिक्षा में शिक्षक और विद्यार्थी के बीच जो मानवीय संबंध होता है, वही शिक्षा को जीवंत बनाता हैं। इस संबंध में संवेदना, विश्वास और नैतिकता की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं।

डिजिटल युग में शिक्षा के स्वरूप में बड़ा परिवर्तन आया हैं। आॅनलाइन कक्षाएं, ई-लर्निंग प्लेटफाॅर्म, डिजिटल सामग्री और कृत्रिम बुध्दिमत्ता आधारित शिक्षण प्रणाली ने शिक्षा को अधिक सुलभ बनाया हैं। अब ज्ञान किसी एक स्थान या व्यक्ति तक सीमित नहीं रहा। मशीन को माध्यम से विशाल मात्रा में जानकारी कुछ ही क्षणों में उपलब्ध हो जाती हैं। मशीन ज्ञान दे सकती है, लेकिन वह संवेदना नहीं सिख सकती शिक्षक के शब्दों में जो मानवीय स्पर्श होता है, जो प्रेरणा और मार्गदर्शन होता है, वह मशीन में संभव नहीं हैं।

10. मीड़िया, बाजार और भाषा:

आधुनिक मीड़िया और बाजार ने भाषा के स्वरूप को गहराई में प्रभावित किया हैं। सोशल मीड़िया, विज्ञापन और डिजिटल प्लेटाफाॅर्म पर भाषा चरित, संक्षिप्त और भावनात्मक रूप से असली होती जा रही हैं। बाजार की भाषा उपभोक्ता को आकर्षित करने पर केंद्रित होती है, न कि संवेदना के विस्तार पर। इससे भाषा का मानवीय पक्ष कमजोर हो रहा हैं। संवाद की जगह शोर ने ले ली हैं। इस स्थिति में साहित्य और शिक्षा की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वही भाषा को संवेदनशील बनाएं रख सकते हैं।

11. नैतिकता और उत्तरदायित्व:

भाषा केवल अभिव्यक्ति का साधन नहीं है, वह नैतिक जिम्मेदारी भी है। मनुष्य जब कुछ कहता या लिखता है, तो उसके शब्द समाज पर प्रभाव डालते हैं। इसलिए भाषा के प्रयोग में नैतिक विवके आवश्यक हैं। मशीन के पास यह नैतिक विवके नहीं होता। वह न यह समझती है कि कौन-सा कथन समाज को जोड़ सकता है। और कौन सा तोड़ सकता हैं। यदि भाषा को पूरी तरह मशीन के हवाले कर दिया गया तो झूठ, भ्रम और संवेदनहीनता का प्रसार हो सकता है। इसलिए तकनीक के साथ नैतिकता का संतुलन बनाएं रखना आज की सबसे बड़ी चुनौति हैं।

12. भविष्य की दिशा और चुनौतियां:

भविष्य में कृत्रिम बुध्दिमत्ता और अधिक विकसित होगी। मशीनें और अधिक स्वायत्त, तेज और प्रभावशाली बनेंगी। भाषा के क्षेत्र में उनका हस्तक्षेप भी बढेगा। यह स्थिति अवसर और चुनौति दोनों प्रस्तुत करती है। अवसर इस रूप में कि भाषा का प्रसार व्यापक होगा, अनुवाद सरल होगा और ज्ञान तक पहुंचना आसान बनेगी। चुनौति इस रूप में कि मानवीय संवेदना, मौलिकता और नैतिकता खतरे में पड़ सकती हैं।

भविष्य की दीशा इस बात पर निर्भर करेगी कि मनुष्य तकनीक को किस रूप में अपनाता हैं। यदि भाषा को संवेदना से जोड़े रखा गया, तो तकनीक मानव कल्याण का साधन बनेगी अन्यथा समाज यांत्रिक और संवेदनहीन हो सकता हैं।

उपसंहार:

भाषा, संवेदना और मशीन के आपसी संबंधों का यह अध्ययन स्पष्ट करता हैं कि भाषा केवल तकनीकी संरचना नहीं है बल्कि वह मनुष्य की आत्मिक सांस्कृतिक और नैतिक चेतना का विस्तार हैं। मशीन ने भाषा के क्षेत्र में अद्भूत क्षमता अर्जित की है, किंतु उसकी यह क्षमता मानवीय अनुभवों के अनुकरण तक सीमित हैं। मशीन शब्दों की संरचना, वाक्य-विन्यास और शैली का अनुकरण कर सकती है, परंतु वह अनुभूति, पीड़ा, करूणा और प्रेम को वास्तविक रूप में महसूस नहीं कर सकती। मानवीय अभिव्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता उसकी

संवेदनशीलता हैं। यही संवेदनशीलता भाषा को जीवंत बनाती हैं और साहित्य, कला तथा दर्शन को अर्थ प्रदान करती हैं। यदि भाषा से संवेदना समाप्त हो जाए, तो वह केवल सूचना का माध्यम बनकर रह जाएगी। इस संदर्भ में यह आवश्यक है कि तकनीक को भाषा का सहायक बनाया जाए न कि उसका स्थान प्राप्त कर सकें।

शिक्षा, साहित्य, मीड़िया और सामाजिक संवाद के क्षेत्र में मशीन का विवेकपूर्ण उपयोग ही मानवीय मूल्यों की रक्षा कर सकता हैं। मनुष्य को यह समझना होगा कि तकनीक साधन हैं, साध्य नहीं भाषा का उद्देश्य केवल संवाद नहीं, बल्कि मानवता का संरक्षण भी हैं। भविष्य की दिशा इस बात पर निर्भर करेगी कि हम भाषा को संवेदना से जोड़कर रखते है या उसे पूरी तरह यांत्रिक बना देते हैं। यदि भाषा में मानवीय संवेदना जीवित रहेगी, तभी समाज मानवीय बना रहेगा।

संदर्भ सूची:

1. नामवर सिंह, साहित्य और समाज

2. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास

3. महादेवी वर्मा, मनुष्य और संवेदना

4. भारतीय भाषा परिषद, भाषा और तकनीक पर प्रकाश

5. निर्मला जैन, आधुनिक साहित्य विमर्श

6. भरत मुनि, नाट्यशास्त्र

7. डॉ. मलखान सिंह, भाषिक संवेदना और समकालीन हिंदी कविता

8. डॉ. माधव सोनटक्के, हिंदी भाषा तथा साहित्यशास्त्र

9. सुधींश पचैरी, जनसंचार माध्यम

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)